क्रमशः —

B.A. I Part Hons
Hindi
Paper - I
महाकवि बिहारी काव्य

(1)

25/9/21

डॉ० अवधेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन०के० कॉलेज,
जहानाबाद

बिहारी के दोहे में शृंगार सौन्दर्य — क्रमशः —

इनकी भक्ति राधा और कृष्ण की समर्पित है। बिहारी की आराध्या देवी राधा है। उनके प्रति कवि ने अनगढ़ श्रद्धा प्रकट की है —

मोरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय।

सतसैया मुकुट कवि कालिदास तथा दोनों में सुनने वाले कृष्ण राह बिहारी को बहुत प्रिय है। कृष्ण के इसी रूप को इन्होंने अपने हृदय में धारण किया है —

सतसैया मुकुट कवि कालिदास
तब सुनैया श्याम कान्हा।
राह बाधाओं को मेरा बाँधे
रहिए बिहारीलाला ॥

बिहारी को अपने आराध्य के प्रति अनन्य विश्वास है। इनका मानना है कि भगवान के चरणों की प्राप्ति तभी हो सकती है जब भक्त का विश्वास केवल भगवान का हो जाये। वे तो अपने कृष्ण के पैरों पड़े होते पर इतने मुग्ध है कि अपने हृदय को भी चंचल नहीं बनाना चाहते। उन्हें चिंता है कि सबको बचाने वाला कृष्ण भगवान तीन अंगों से टेढ़ा होकर मेरे हृदय में चढ़ा ही न हो कहीं। संसार के निंदा की चिंता मुझे नहीं —

कहौं कहात जग कुटिलता
तजौं न दीनदयालु।
दुखी होहुगे सरल हिय
बसत त्रिभंगी लालु ॥

बिहारी वस्तुतः शृंगार के कवि हैं। बिहारी के दोहों में प्रेम और सौन्दर्य का अनगढ़ सागर

क्रमशः —